भाषा विज्ञान

B.A. (H) Part II, Paper-IV
& B.A. (H) Part III, Paper-VII } Unit-3

DR. ARVIND JHA
Assit. Prof.
Dept. of Maithili
Marwari College
Darbhanga
M-9040201409

ध्वनि नियम

भाषा विज्ञान मे ध्वनि, ध्वनि-यंत्र, ओकर विकास, विकार एवं परिवर्तन आदिक अध्ययन कएल जाइछ। परिवर्तन एक आवश्यक ओ अपरिहार्य प्रक्रिया थिक। जीवनक प्रत्येक क्षेत्र मे एकर प्रभाव देखल पड़ैछ। भाषा विकासक परिवर्तन के विद्वान लोकनि 'विकार ओ विकास' क संज्ञा दैत छथि। भाषाक विभिन्न अंगक सदृश ध्वनि मे सेहो परिवर्तन होइत रहैछ। ई परिवर्तन आभ्यन्तर एवं बाह्य कारण सँ होइछ। आभ्यन्तर कारण मे वक्ता ओ श्रोता प्रधान होइछ, परञ्च बाह्य कारणमे मानव सुरव, अनुकरणक अपूर्णता, श्रमक दुरुपयोग, भावुकता, व्यक्तिक विभिन्नता, सादृश्य, विदेशी ध्वनिक प्रभाव आदि अनेक कारण थिक। एहि विभिन्न कारण ओ ओकर विश्लेषक अध्ययन कए भाषा वैज्ञानिक लोकनि ध्वनि नियम केँ स्थापित कएलनि। ध्वनि नियमक परिभाषा ओ स्वरूपकेँ स्पष्ट करबा काल निम्न बिन्दु सभ पर ध्यान राखब

आवश्यक बिन्दु।

(i) ध्वनि नियम कोनो भाषा विशेषक होइछ। एक भाषाक ध्वनि नियम दोसर भाषा पर लागू नहि भ' सकैछ।

(ii) एक भाषा सब ध्वनि पर नियम विशेष लागू नहि भए किन्तु विशेष ध्वनि पर लागू होइछ।

(iii) ध्वनि परिवर्तनक सम्बन्ध एक विशेष कालसँ होइछ, संगहि विशिष्ट दशा या परिस्थितिमे कोनो विशिष्ट कालक कोनो विशिष्ट ध्वनिमे परिवर्तन होइछ।

ध्वनि नियमक परिभाषा —

यदि विशेष परिस्थितिमे पड़ि कए कोनो एक क्रिया समय एवं स्थानक सीमाक अतिक्रमण कए सर्वथा एकहि रूपमे घटित होइछ तँ ओकरा नियमक संज्ञा देल जाइछ। जाहि तरहें प्रकृतिक विभिन्न कार्य के देखि के किछु सामान्य आ किछु विशेष नियमक निर्माण कए लेल जाइछ ओहि प्रकारे ध्वनिमे विकारक कार्य के देखि ध्वनि नियम निर्धारित कए लेल जाइछ।

डॉ० भोलानाथ तिवारीक अनुसारे — कोनो विशिष्ट भाषाक किछु विशिष्ट ध्वनिमे कोनो विशिष्ट कालमे किछु विशिष्ट दशामे भेल नियमित परिवर्तन या विकारके ओहि भाषाक ध्वनि नियम कहल जाइछ।

ध्वनि परिवर्तन एवं ओकर कारण—

ध्वनि परिवर्तन – भाषा परिवर्तनशील अछि। ई परिवर्तन ओहिना सब स्तर - वाक्य, रूप, अर्थ एवं ध्वनि आदि पर होइछ -

उदाहरणार्थ - संस्कृतक 'घोटक' शब्द बदलैत - बदलैत हिन्दीमे 'घोड़ा' भए गेल;

घोटक > घोडग > घोडअ > घोड़ा
अर्थात 'ट' ध्वनि 'ड़' भए गेल।
ई ध्वनि परिवर्तन थिक।

एहिना अंग्रेजी शब्द 'स्टेशन' भारतीय भाषा एवं बोलीमे इस्टेशन (इ क आगम) सटेशन (अ क आगम) टेसन (स् क लोप) आदि कतेको रूपमे भेटइ छ एवं एहि सबमे कोनो ने कोनो रूपक ध्वनि परिवर्तन होइछ।

ध्वनि परिवर्तनक कारण - ध्वनि परिवर्तनक कारण दू प्रकारक होइछ - आन्तरिक एवं बाह्य।

आन्तरिकसँ तात्पर्य थिक, ओ कारण जे शब्दमे स्वयं ध्वनि विशेषमे परिवर्तन होइछ।

बाह्य कारण ओ थिक जे शब्दक अभ्यन्तर नहि भए ओकर बाह्य परिस्थिति अथवा वक्ता आदिसँ होइछ।

वाग् - यन्त्र

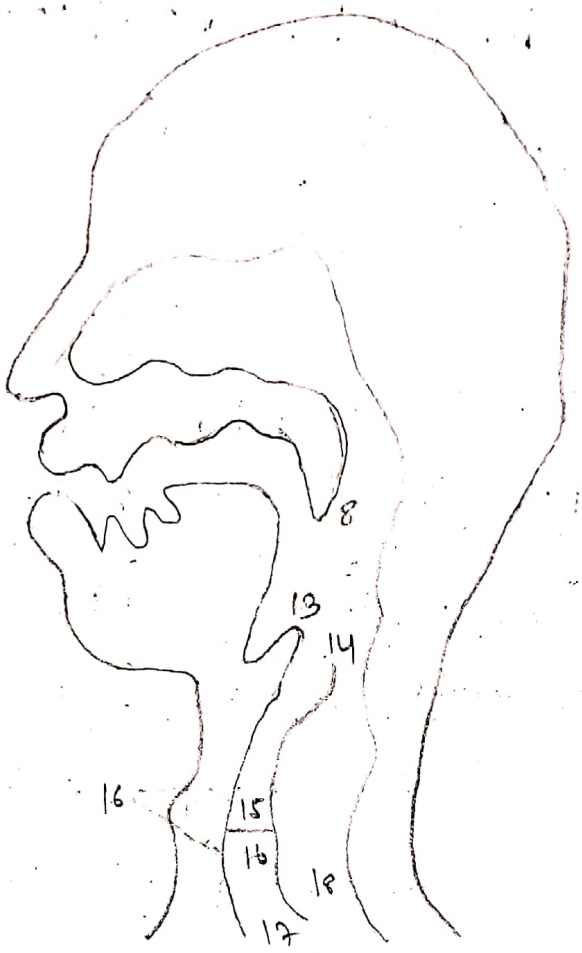

1. नासिक विवर
2. ओष्ठ
3. दन्त
4. वर्त्स
5. मूर्धा
6. कठोर तालु
7. कोमल तालु
8. अलिजिह्वा
9. जिह्वाग्र
10. जिह्वाग्र (front of the tongue)
11. जिह्वा मध्य (middle of the tongue)
12. जिह्वा पश्च (back of the tongue)

Scanned with CamScanner